



विपश्यना

[साधकों का मासिक प्रेरणापत्र]

रबि. नं. १९१५६/७१

पोस्टल रबि. नं. NSM-16/83

वर्ष १२

● बम्बई

● बुद्धवर्ष २५२६

● पौष पूर्णिमा [शक]

● दि. २८-१-१९८३ ● अंक ८

वास्तविक दुःख-विमक्तिका उपाय : विपश्यना

कन्हैयालाल लोढा

दुःख किसीको पसंद नहीं है। दुःख उसीको भोगना पड़ता है जो विषय-सुखका भोगी है। अतः दुःखसे छूटनेका एक ही उपाय है कि हम सुख-भोगका त्याग करें। तब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि सुखका त्याग कर दें तो फिर जीवित रहनेका अर्थ ही क्या रह जाता है ? क्योंकि सुख-रहित जीवन किसको पसंद होगा ? सुखके बिना जीवन व्यर्थ है। अतः हमें सुख चाहिए ही।

इस प्रकार दो स्थितियां हमारे सामने हैं। एक तो यह कि सुखके भोगीको दुःख भोगना ही पड़ता है जो हमें पसंद नहीं। और दूसरी यह कि यदि हम सुख त्याग दें तो सुख-रहित जीवन भी हमें पसंद नहीं। अतः समस्या पैदा होती है कि ऐसी दुविचामय स्थितिसे छुटकारा कैसे मिले ? तो समाधान यही मिलता है कि हमें ऐसा सुख मिले जो दुःख-रहित हो।

दुःख-रहित सुख प्राप्तिके लिए सुखके रूपों पर विचार करना होगा। सुखके दो रूप हैं— एक रूप है इंद्रिय भोगसे प्राप्त विषय-सुख जैसे इष्ट पदार्थ खाना, पहनना, संघना, देखना आदि।

दूसरा रूप है शांति, समता, मैत्री, उदारता, स्वाधीनता आदिसे मिलनेका रस या सुख। जब चित्त शांत होता है तो उसका अपना एक रस है, सुख है। जब हम सेवा द्वारा किसीका दुःख दूर करते हैं और परिणामतः उसे जो सुख होता है, प्रसन्नता होती है, उससे हमें भी मोद होता है, प्रीति होती है। यह भी एक सुख है। संसार और शरीर से असंग होनेसे स्वाधीनताका, मुक्तिका जो अनुभव होता है इसका भी अपना सुख है।

प्रथम प्रकारका सुख जो इंद्रिय-भोगसे संबंधित है, इसकी प्रतीति कामना पूर्ति से होती है। इस सुखमें प्रारंभसे अंत तक पराधीनता, परवशता, विवशता, बड़ता, मुदता, नीरसता, शक्ति-क्षीणता, अभाव आदि संसारकी समस्त अलिप्त स्थितिओं व दोषोंकी उत्पत्ति होती है तथा समस्त दुःखोंका मूल यही सुख है। संसारमें कोई भी दुःख ऐसा नहीं है जिसका कारण विषय-सुख न हो। यह अटल नियम है कि

धम्म वाणी

सुब्बागार पविट्ठस्स सन्त चित्तस्स भिक्खुनो ।

अमानुसी रती होति, सम्मा धम्मं विपस्सतो ॥

धम्मपद २५/१४

किसी शून्यागारमें प्रवेश करके कोई शांत चित्त साधक जब सम्यक् रूपसे धर्मानुपश्यना करता है तो उसे लोकोत्तर सुख प्राप्त होता है जो कि सामान्य मानवीय लोकीय सुखोंसे परे है।

दुःख-रहित विषय-सुख नहीं मिल सकता। जहां विषय-सुख होगा, वहां दुःख रहेगा ही। अतः दुःख-रहित सुख, विषय-सुखके त्यागसे ही संभव है। विषय-सुखसे कमी संभव नहीं।

विषय-सुखके त्यागका अर्थ है विषय-भोगकी कामनाओंका त्याग; विषय-भोगकी सामग्रीकी ममता व अपनेपनका त्याग; प्राप्त सामग्री व बलका भोग केवल स्वयं न कर उसे परसेवामें लगा देना। कामना त्यागसे शांतिका सुख, ममता-त्यागसे मुक्ति (स्वाधीनता) का सुख तथा सेवाभावसे प्रीतिका सुख मिलता है। शांति, मुक्ति व प्रीतिका सुख दुःख-रहित सुख है। शांति, मुक्ति और प्रीतिकी अनुभूति आनापान व विपश्यनासे होती है। यहाँ इसी पर विचार करना है।

आना-पानमें साधक स्वांश पर चित्त एकाम करता है जिससे चित्तकी अस्थिरता, चंचलता, अशांति मिट जाती है। शांतिके साम्राज्य में प्रवेश हो जाता है। चित्तकी शांति का भी एक रस है, सुख है जो विषय-रस या सुखसे भिन्न है। इससे आगे बढ़कर साधक जब विपश्यना करता है तो वह शरीर, चित्त एवं चित्तमें उठनेवाले विकारों एवं संवेदना-ओंका द्रष्टा बन जाता है, कर्त्ता-भोक्ता नहीं रहता। द्रष्टा बननेसे इनकी अनुकूलता-प्रतिकूलता का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता। फलतः वह अनुकूलता-प्रतिकूलता में सुखी-दुःखी नहीं होता। अर्थात् सुख-दुःखसे मुक्त हो जाता है। इस मुक्तिका भी अपना रस है जो शांतिके रससे विशेष प्रकारका है। इस रहस्यको विपश्यी साधक ही जानता है। शांति और मुक्तिके रसके साथ प्रीतिकी जाग्रति होती है। प्रीतिके रसका सुख निराला ही होता है।

शांति, मुक्ति और प्रीतिका सुख विषय-सुखसे सर्वथा भिन्न होता है। यह सुख स्वाधीनता, चिन्मयता, निराकुलता व संतुष्टि-युक्त होता है। जबकि विषय-सुख अभाव, पराधीनता, जड़ता आदि दोषोंसे युक्त होता है। यह नियम है कि ऐन्द्रिय सुख प्रतिक्षण क्षीण होता है और अंतमें इस सुखकी परिणति नीरसता में होती है। उदाहरणार्थ कैसा ही स्वादिष्ट भोजन हो, कैसा ही मधुर संगीत हो, खाते-खाते व सुनते-सुनते ऊब ही जाते हैं। नीरसता या ऊब मिटानेके लिए विषय-सुखका भोगी फिर नवीन विषय-सुख पानेकी नई कामना करता है। उसकी पूर्तिका सुख भोगता है। जिसका अंत पुनः नीरसता (बोर्डम) में होता है। इस प्रकार नीरसता (बोर्डम) दूर करनेके लिए निरन्तर कामनाकी उत्पत्ति-पूर्तिका चक्र चलता ही रहता है। इस नीरसताका निवारण करना, उसकी जड़ उखाड़ना ही इस चक्रसे छुटकारा पाना है।

नीरसता दूर करनेका सच्चा उपाय है ऐसे रसकी उपलब्धि जो क्षणिक न हो, क्षीण न हो। शांति, मुक्ति और प्रीतिका रस ऐसा ही रस है। कारण कि यह रस न तो किसी अनित्य व अनात्म पदार्थ से पैदा होता है और न किसी अनित्य व अनात्म पदार्थ पर निर्भर करता है। यह रस स्वरस है अतः स्वाधीन है। किसी देश, काल व पदार्थ/पुद्गल के आधीन नहीं है। अतः यह रस अक्षुण्ण रहनेवाला है। इसका अंत कभी नीरसतामें नहीं होता। प्राणी केवल इससे विमुक्त होता है वह भी अपनी स्वयं की भूल से। प्राणी अपनी ही भूल-भ्रान्ति से विषय-सुख में जो वस्तुतः सुखाभास है, पराधीनता आकुलता आदि दोषों या दुःखोंसे युक्त है, सही सुख पानेकी कामना करता है तो शांति के सही सुखसे विमुक्त हो जाता है। ममता करता है तो मुक्ति (स्वाधीनता) प्राप्तिके रससे विमुक्त हो जाता है।

आशय यह है कि विषय-सुख ही समस्त दोषों व दुःखोंका बीज है। यह बीज नीरसताकी भूमि में उपजता है। अर्थात् नीरसताकी भूमिमें विषय-सुखकी कामना उत्पन्न होती है। विषय सुखकी कामना व भोगकी इच्छा तभी मिट सकती है जब प्राणीको ऐसा सुख मिले जो अनित्य व अनात्म पदार्थों पर निर्भर न हो! वह स्व रस ही हो सकता है। उस स्व रसकी अनुभूति शांति, मुक्ति व प्रीतिके रूपमें होती है। इनकी अनुभूति विषयना साधना में होती है। अतः विषयकी साधक स्वरस प्राप्त कर विषय सुखों पर विजय प्राप्त करता है। जिसे स्वरस नहीं मिलता वह कोटि उपाय करे, कोटि ग्रंथ पढ़े, कामनाओं पर विजय नहीं पा सकता। उसका चित्त कामना उत्पत्तिसे अशांत होगा ही, ममता से पराधीन होगा ही, स्वार्थपरतासे संकीर्ण होगा ही। अशांति, पराधीनता किसीको भी पसंद नहीं।

सब विषय-सुख इंद्रिय-भोगोंसे संबंधित हैं अतः एक ही जाति (क्वालिटी) के हैं। जबकि स्वरस अनेक प्रकारके हैं। उनमें शांति, मुक्ति प्रीति, शक्ति, जाग्रति आदि रस मुख्य हैं। इनकी अनुभूतिसे ही नीरसताका अंत संभव है। शांतिके सुखकी अनुभूति कामना-निवृत्ति-जन्य चित्तकी स्थिरतासे ही संभव है। यह अनुभूति अनित्यत्वके बोध आना-पान व विषयनासे ही होती है। शांति व विश्रान्तिकी भूमि में ही शक्तिका प्रादुर्भाव होता है। मुक्ति (स्वाधीनता) की अनुभूति शरीर और संसारसे अद्वेषन (आत्मत्व) के त्यागसे, उपेक्षासे होती है जो विषयनासे सहज संभव है। मुक्तिकी अनुभूतिमें ही जाग्रति, चिन्मयता,

सजगताका आविर्भाव होता है। विषयना से राग-द्वेष, मोह आदि विकारोंसे ग्रस्त दुःखी प्राणियोंके प्रति करुणाभाव जागता है। करुणा-भावसे प्रीति, प्रमोद, मैत्रीभावका उदय होता है। कामना व ममता त्यागसे स्वार्थपरता व स्वामित्वभाव मिट जाता है जिससे उदारता व प्रीति रसकी गंगा बहने लगती है। इस प्रकार विषयना साधनासे साधक का मैत्री, प्रमोद, करुणा व माध्यस्थ (उपेक्षा-विराग) भाव व सर्वहितकारी प्रवृत्तिमय जीवन बन जाता है। उससे निज रस आने लगता है, जिससे विषय-सुख व नीरसताका अंत स्वतः हो जाता है। फलस्वरूप कामना, वासना; ममता, अहंता आदि विकार गल जाते हैं। शांति, मुक्ति, प्रीति, मैत्री, प्रमोद, करुणा, उपेक्षा भावके रस के अभावमें केवल सिद्धान्तोंकी चर्चा व चिंतनसे नीरसता व विषयभोगका अंत कदापि संभव नहीं है। विषयसुखके भोगीको अशांति, पराधीनता, अभाव, तनाव, रोग, शोक, जन्म, जरा, मरण आदि दुःखोंको भोगना ही पड़ेगा, यह प्राकृतिक विधान है जिसे टालनेमें कोई भी समर्थ नहीं है। इन अनिष्ट स्थितियों व दुःखोंसे मुक्ति पानेके लिए विषयना साधना को अपनाना ही पड़ेगा। विषयना करनेमें मानव मात्र समर्थ व स्वाधीन है। फिर भी मानव दुःखी रहे, यह समझदारी व शोभा की बात नहीं है। अतः राग, द्वेष, मोह आदि विकारोंका नाश कर दुःख-रहित शाश्वत सुख पानेके लिए विषयना साधना, धर्म-साधना करनेमें एक क्षणका भी प्रमाद नहीं करना चाहिए।



आवश्यकता है

- १) यहाँ विद्यापीठमें इस सत्रका नव-निर्माणकार्य आरंभ हो चुका है। निर्माणकार्य सुचारु एवं व्यवस्थित ढंगसे चल्ता रहे, इसके लिए किसी सुयोग्य अनुभवी साधककी सुपरवाइजरके रूपमें आवश्यकता है जो कि अपनी सेवाएँ पूरे समयके लिए दिया चाहता हो।
 - २) इसी प्रकार आय-व्यय एवं चल-अचल संपत्तिका लेखा-जोखा रखने (रजिटर मेंटेन करने) के कामका जानकार कोई व्यक्ति अपनी सेवाएँ दिया चाहता हो तो...
- कृपया व्यवस्थापक से संपर्क करें !

पू. गुरुजीका सार्वजनिक प्रवचन

आगामी २५ फरवरी, ८३ दिन रविवार को "श्री वीरजी लघा-भाई कच्छी दशाओसवाल, जैन विद्यार्थी गृह, लक्ष्मी निवास, कामा-लेन, घाटकोपर (प.) मुंबई" में -- प्रातः ९ से १० बजे तक पू. गुरुजीके साथ विषयकी साधकोंकी सामूहिक साधना एवं १० से ११ बजे तक "विषयना साधना और उसके लाभ" विषयपर उनके सार्वजनिक प्रवचनका कार्यक्रम निश्चित हुआ है।

साधक अपने सगे-संबंधियों एवं परिचित-मित्रों सहित इस अवसरका लाभ उठा सकते हैं।

साधकोंके उद्गार

अरविन्दो आश्रम, पांडिचेरी से श्री मदनलालजा हिम्मतसिंहकाने अपने स्वयं-शिविरके अनुभव लिखे हैं, "...देखता हूँ कि आना-पानमें जो तरंगित लहरें उठती हैं वे ही सारे शरीर को प्रकम्पित करती रहती हैं। अब तो २४ घंटे आनापान-विषयना चलती रहती है। रात-रात भर पड़ा या बैठकर देखता रहता हूँ। (विषयना) सारे शरीरमें होती रहती है। देखता रहता हूँ कि किस भागमें कितनी तीव्रता है। जब बीच-बीचमें क्षण-मैत्रीके भाव उठने लगते हैं तब प्रेमका प्रवाह बन जाता है। ये तीनों मिली, गंगा-त्रिवेणीका संगमका आनंद देती है। तीनों भावनाएँ पुष्टतर होती जाती हैं। चेष्टा करता हूँ तटस्थ बने रहने की। स्थूल से सूक्ष्म, सूक्ष्मतर अनुभवकी ओर कोई शक्ति ही ले जा रही है। मेरा निजका हाथ उसमें बहुत कम दिखता है। सुबह-शाम अवकाशके समय दो घंटे घूम लेता हूँ। उसमें प्रवाह गहनतम और सूक्ष्मतर होता जा रहा है। अन्य समय में शून्यागारमें ही अधिक बैठता हूँ।

आपके मार्गदर्शनके लिए आभारी हूँ। भगवान आपका मंगल करे! मंगल करे!"



न्यूजीलैंडके एक कलाकार युवक रोबर्ट कोट्सने दस वर्ष पूर्व डलहीजी और वाराणसी में चार विषयना शिविर लिए थे। इससे उसके जीवनमें बहुत बड़ा अंतर आया। खानाबदोशी हिप्पीका जीवन छोड़कर अब वह उत्तरदायित्वका कुशल जीवन जीने लगा। न्यूजीलैंडके इस शिविरमें वह पुनः भाग लेने आया। उसके जीवनमें आए इस सुखद परिवर्तनसे उसकी माता श्रीमती पेमी कोट्स अत्यंत प्रसन्न प्रभावित थी। वह यह जानकर भाव-विभोर हो उठी कि जिस व्यक्तित्वने उसके पुत्रके जीवनमें ऐसा आश्चर्यजनक सुधार ला दिया वह स्वयं न्यूजीलैंड आ रहा है। वह आकलैंट नगरके समीप लगे विषयना शिविरमें गुरुजीका प्रवचन सुनने आयी और अत्यन्त विभोर हुई। उसने अपने कृतज्ञताके भाव प्रकट करते हुए लिखा---

"आपने मेरे पुत्र रोबर्टके लिए जो कुछ किया उसके लिए मैं अत्यंत आभारी हूँ। अब वह धर्ममें जाग गया है। पीछे नहीं हट सकता, पुराने जीवनकी ओर नहीं जा सकता।

मैं स्वयं आपका प्रवचन सुनकर कितनी प्रसन्न हुई। अगली बार आएँ तो कृपया एक प्रवचन नगरमें देनेकी कृपा करें जिससे बहुत बड़ी संख्यामें लोगोंको लाभ हो।"



जर्मन युवक जुर्गनस्टौवाजर पिछले वर्ष धम्मगिरि पर कुछ विषयना-शिविरों में भाग लेकर आस्ट्रेलिया चला गया। सिडनी में लगे शिविरमें वह धर्म सेवा करने आया। तदनन्तर अपने एक पत्रमें लिखता है।

"मेरे भीतर एक अपूर्व शान्ति जागी है जो कि उत्प्रेरित कर रही है कि मैं आपका अनुसरण करूँ, धर्म के प्रति पूर्णतया आश्रय समर्पित हो जाऊँ। मैं अपने मनचाहे गलत रास्ते जाकर मनचाहा काम कर सकता था। लेकिन हर बार मेरे लिए आपकी ओर जानेका रास्ता

खुलता गया और अब तो मेरे लिए अत्यंत स्पष्ट हो गया है कि मैं आपका ही अनुसरण करूँ, धर्मका ही अनुसरण करूँ। केवल मैं ही नहीं, बल्कि निश्चय ही धर्म भी यही चाहता है। इस सच्चाईको समझनेमें मुझे थोड़ा समय लगा लेकिन अब तो यह बहुत स्पष्ट है की धर्म शक्तियां मेरा मार्ग-निर्देशन कर रही हैं।

पिछले वर्ष फरवरी महीनेमें धम्मगिरि पर जब मैंने आपके दर्शन किए तो मुझे यह विश्वास हो गया कि आपकी शिक्षा मुझे यह समझने योग्य बना देगी कि जीवन इतना दुःखमय क्यों है! मैंने आपके आदेशोंका यथाशक्ति पालन किया और विषयना साधना मेरे जीवनका महत्वपूर्ण अंग बन गयी। विषयना सीखनेसे पूर्व मेरा जीवन असीम पीड़ाओं से भरा हुआ था। मैं कितना मूढ़ और अज्ञानी था। इन दुःखोंके बाहर निकलनेकी कोई राह नहीं जानता था। आपकी शिक्षासे मैंने वह रास्ता पा लिया। अब तो जीवन कितना सरल हो गया! मैं अपने भीतर कितनी शान्ति महसूस करता हूँ! मैं नहीं जानता और जानना जरूरी भी नहीं कि मैंने कितनी प्रगति कर ली है। पर इतना अवश्य जानता हूँ कि प्रत्यक्ष सुधार हुआ है।

सिडनीके शिविरके बाद मेरे लिए एक बात स्पष्ट हो गयी है कि आप मेरे धर्म-पिता हैं। पहले आप मेरे गुरु थे। अब पिता हैं। मैं आपके प्रति अत्यंत कृतज्ञ हूँ। आपने अपनी सुख-शांतिमें मुझे भागीदार बनाया।

मैं धर्मपंथ पर आगे बढ़नेके लिए यथाशक्ति प्रयत्न करता रहूंगा। तदनन्तर आशा करता हूँ जयपुर और धम्मगिरिके शिविरमें भाग लेकर समुचित शक्ति अर्जित कर स्वदेश जर्मनी लौटकर धर्म में लग सकूंगा।"



संपर्क सूत्र

- १) हैदराबाद- १) श्रीमता ऊषाबेन पी. मेहता, ६१, श्रीनगर कॉलोनी, हैदराबाद-५०० ८७३. फोन : ३०२९१ अथवा २) श्री पूरनमल अग्रवाल, द्वारा होटल राजधानी, सिद्धिअम्बर बाजार, हैदराबाद-५०० ०१२. फोन : ५७५७१.
- २) इगतपुरी- व्यवस्थापक, विषयना विश्व विद्यापीठ, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२ ४०३. फोन : इगतपुरी ७६.
- ३) तिनसुकिया- १) श्री रामवल्लभजी साबू आसाम ट्रंक रोड, तिनसुकिया (आसाम) पिन- ७८६ १४६. अथवा २) श्री हरिप्रसादजी मालपाणी C/o. अनुपम मार्केटिंग प्रा. लि., २७/२ D स्ट्रीट रोड, कलकत्ता-७००००१ फोन : २२८८७७/२२६६९२

इगतपुरी में स्वयं-शिविर

स्वयं शि. क्र. ११० दि. १२-२-८३ से २३-२-८३ तक

भावी-शिविर

भारत में स. आचार्योंके शिविर

शि. क्र.	स्थान	दिनांक से तक	क्र.	स्थान	दिनांक से तक	संचालक
● ऋषु शिविर	हैदराबाद	१४-२-८३ से २१-२-८३	NH-८	इगतपुरी	१-३-८३ से १२-३-८३ ,,	श्री न. पारिख
● (केवल पुराने साधकों के लिए) इसमें पूज्य गुरुजी सतिपढान सुत्त की न्याख्या करेंगे।			NH-९ ,,	१-४-८३ से १२-४-८३ ,,	” ” ”	
२२७	इगतपुरी-१२-३-८३ से २३-३-८३ तक (हिन्दी)		LN-६	तिनसुकिया	१६-३-८३ से २७-३-८३ ,,	श्री. ल. ना. राठी
—	” १२-४-८३ से २३-४-८३ ,, ”		संपर्क : (कृपया पृष्ठ ३ पर देखें)			
दीर्घ-शिविर -	इगतपुरी -	१-३-८३ से २३-३-८३ तक (केवल पुराने साधकों के लिए)				

सूचना : १) कृपया साधना शिविर में शामिल होने से पूर्व शिविर-व्यवस्थापक के पास अपना नाम रजिस्टर करा लें। किसी कारणवश शिविर में सम्मिलित न हो सकते हों तो पर्याप्त समय रहते सूचित करें ताकि किसी अन्य प्रत्याशी को स्वीकृति दी जा सके। २) अंग्रेजी शिविर में हिन्दी-प्रवचन सुनने के लिए हिन्दी-टैप की सुविधा उपलब्ध रहती है। ३) शिविरों के नियम कड़े होते हैं। उनका कड़ाई से पालन कर सकें तो ही भाग लेना चाहिए।

एक शुभेच्छु

की मंगल कामनाओं सहित



दूहा धरम रा

तृष्णा पूरी करण सूं, हुवै न दुख को अंत ।
जै सुख चौवै मानखा, चाल धरम कै पंथ ॥
कैठे बुझायो बावळा, प्रग्या ग्यान प्रदीप ।
मुक्ता भौती त्याग कर, संचित कर ढी सीप ॥
राग द्वेस अर मोह री, काल अंधेरी रात ।
प्रग्या रे सरज उग्यां, मंगल हुवै प्रमात ॥
भोगत भोगत अर गयो, अंतर विविध विकार ।
देखत देखत हो गयो, निरमल निरहंकार ॥
आयी परज तडपती, धरम गंग रै तीर ।
पावन जल रै परस सूं, मिटगयी मन की पीर ॥
धुलगयी मन की गंदगी, धुलग्या मन का पाप ।
धन्य धरम ओसध मिली, उतर गयी भव ताप ॥

दोहे धर्म के

आते पीते रैन-दिन, मिटे न भूख न प्यास ।
कायम रहती कामना, यही जीव का त्रास ॥
दुख-सुख सुख-दुख भोगते, रहा सदा गमगीर ।
पायी विमल विषयना, दूर हुई भव पीर ॥
तन-सुख, धन-सुख, प्रांति-सुख, केवल प्रकटे कलांति ।
सप्रता सुख ही परम सुख, पाएँ निर्मल शांति ॥
शांत चित्त अन्तर्मुखी, बैठे शून्यागार ।
देखत देखत वेदना, दिखे परम सुख सार ॥
अहो! अहो! सुख मुक्ति-सुख! समता सुख संपन्न ।
जिसके चखा न धर्म-सुख, सचमुच रहा विपन्न ॥
जिस क्षण अंतर्गत में, सप्रता स्थापित होय ।
होवे दूर अशांति सब, दुःख दूर सब होंय ॥

सवाजी ऊ वा खिन मेमोरियल ट्रस्ट के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक : रामप्रताप शाहू, मीन हाऊस, ३ री मंचिल, मीन स्ट्रीट, फोर्ट, बंबई-२३. टेलीफोन : ३१३५१०. ● मुद्रण-स्थान : अक्षरचित्र मुद्रणालय, वातपुर, नासिक-४२२ ००७. टेलीफोन : ८८२५१. ● पत्रिका में विज्ञापन दर : आधा पृष्ठ रु. १०००/-, चौथाई पृष्ठ रु. ५००/- ● वार्षिक शुल्क रु. १०/-, आजीवन शुल्क रु. १००/-

विषयना १/८३

पो. रजि. नं. NSM 16/83

प्रेषक :
सवाजी ऊ वा खिन मेमोरियल ट्रस्ट
विषयना विश्व विद्यापीठ
बम्बैनारि, इगतपुरी-४२२ ४०३.
(नासिक, महाराष्ट्र)

To

License No. NS 18
Licensed to post without pre-payment